राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • शुक्रवार • 31 दिसम्बर • 2021

नवीनतम कृषि तकनीक को किसानों तक पहुंचाने पर जोर

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में कृषि वैज्ञानिकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें नवीनतम कृषि तकनीकों को विभिन्न माध्यमों से किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया गया। 'विस्तार दृष्टिकोण क्रियाविधि और कटाई उपरांत तकनीकी ' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अध्यक्ष एवं प्राध्यापक भूमि संरक्षण एवं जल प्रवंधन विभाग डॉ.मुनीष गंगवार ने तकनीकी हस्तांतरण में प्रसार संसाधनों का वहुत ही वड़ा योगदान है। वैज्ञानिक विभिन्न माध्यमों का प्रयोग कर नवीनतम कृषि तकनीक को किसानों तक पहुंचाने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि कटाई उपरांत तकनीक अपनाकर कृषक अपनी आय वढ़ा सकते हैं।

सीएसए में कृषि वैज्ञानिकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

सह निदेशक प्रसार पीके राठी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में एचवीटीयू के वायोकेमिकल इंजीनियरिंग के अध्यक्ष डॉ.वृजेश सिंह ने पोषण सुरक्षा पर चर्चा करते हुए कहा कि देश में 50 प्रतिशत महिलाएं व वच्चे कुपोषण से प्रभावित हैं। गुणवत्तायुक्त अनाज, दालों, फल, सब्जियों का प्रयोग कर उन्हें कुपोषण से उवारा जा सकता है। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ.देवराज मिश्रा ने कृषि विज्ञान तकनीकी वढ़ाने में आईसीटी के प्रयोग व प्रभाव की चर्चा की। प्रशिक्षण प्रभारी डॉ.एसवी पाल ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में आवश्यकता के अनुरूप विभिन्न विषयों को समाहित किया गया है। आयोजन में सह निदेशक प्रसार डॉ.सुभाष चन्द्रा, डॉ.अनिल कुमार सिंह, डॉ.सोहन लाल वर्मा आदि ने सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।

Sign in to edit and save changes to this file.

ठंड बढ़ने से आलू की फसल झुलसने का खतरा

■ कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को दिये सुझाव

कानपुर, 30 दिसंबर। आलू फसल को झुलसा लगने की संभावना, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ राजीव ने बताया कि वर्तमान मौसम में आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना ज्यादा रहती है। इसको देखते हुए किसानों को सतर्क रहना चाहिए। बताया कि मौजूदा समय में तापमान में गिरावट और वातावरण में अत्याधिक नमी व बदली की वजह से आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ गई। इस बीमारी से आलू के पौधे की पत्तियां झुलस जाती है। झुलसा रोग लगने से आलू का उत्पादन भी प्रभावित हो सकती है। इसीलिए वैज्ञानिकों ने आलू उत्पादक किसानों को जागरूक करना शुरू कर दिया है। डॉ राजीव ने बताया कि फफूंदी के कारण पौधों में अधिक नमी के चलते झुलसा रोग होता है। समय से इसकी रोकथाम न की गई तो पूरी फसल खेत में ही झुलस जाती है। आलू किसानों को सलाह दी है कि कॉपर हाइड्रोक्साइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से अथवा क्लोरोथालोनील 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से फसल में छिड़काव कर दें। जिससे बीमारी से आलू फसल को बचाया जा सकता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

गुरुवार, 30-12-2021 अंक-446

www.worldkhabarexpress.media

www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

आलू को झुलसा लगने से बचाने को दिए टिप्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के आलू वैज्ञानिक डॉ. राजीव ने बताया कि वर्तमान मौसम में आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की आशंका बढ़ गई है जिससे किसानों को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि मौजूदा समय में तापमान में गिरावट और वातावरण में अत्यधिक नमी व बदली की वजह से आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ गई है। इस बीमारी से आलू के पौधे की पत्तियां झुलस जाती है। ऐसा लगता है जैसे पत्तियां जल गई हैं। झुलसा रोग लगने से आलू का उत्पादन भी प्रभावित होने की आशंका है। इसीलिए, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने आलू उत्पादक किसानों को जागरूक करना शुरू कर दिया है। आलू वैज्ञानिक डॉ. राजीव ने बताया कि फफूंद की वजह से आलू के पौधों में अधिक नमी के कारण झुलसा रोग होता है। समय से इसकी रोकथाम न की गई तो पूरी फसल खेत में ही झुलस जाती है। उन्होंने आलू उत्पादक किसानों को सलाह दी है कि कॉपर हाइड्रोक्साइड दो ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से अथवा क्लोरोथालोनील दो ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से आलू फसल में छिड़काव कर दें। इससे इस महामारी रूपी बीमारी से आलू फसल को बचाया जा सकता है।

दैनिक जागरण कानपुर 31/12/2021

कृषि विज्ञानियों को कार्य दक्षता बढ़ाने का प्रशिक्षण

जासं, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में गुरुवार को कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों की दक्षता बढ़ाने के लिए विस्तार दृष्टिकोण क्रियाविधि और कटाई उपरांत तकनीक विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन सहनिदेशक प्रसार डा. पीके राठी ने किया। मुख्य अतिथि भूमि संरक्षण एवं जल प्रबंधन विभाग के अध्यक्ष डा. मुनीष गंगवार रहे। डा. गंगवार ने कहा कि तकनीकी हस्तांतरण में प्रसार संसाधनों का बड़ा योगदान है। वैज्ञानिक नए प्रसार-प्रचार माध्यम से नवीन जानकारी किसानों को दें। उन्होंने कृषि में एग्री स्टार्टअप की संभावना पर भी प्रकाश डाला। एचबीटीयू के बायोकेमिकल इंजीनियरिंग के अध्यक्ष डा. बृजेश सिंह ने बताया कि देश में 50 फीसद महिलाएं व बच्चे कुपोषण से प्रभावित हैं, जिसके लिए गुणवत्तायुक्त अनाज, दालों, फल-सब्जियों की जरूरत है।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

पीएम मोदी ने उत्तराखंड में 17,500 करोड़... 12

जाति के नाम पर वोट लेनेवाले सिर्फ अपना भला... 10

जन एक्सप्रेस

www.janexpresslive.com/epaper

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive

लखनऊ

वर्ष: 13 | अंक: 79

मूल्य: ₹3.00/-

पेज : 12

लखनऊ | शुक्रवार | 31 दिसंबर, 2021

आलू को झुलसा रोग से बचाने के बताए उपाय

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

वर्तमान मौसम में आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की आशंका बढ़ गई है।जिससे किसानों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। तापमान में गिरावट और वातावरण में अत्यधिक नमी व बदली की वजह से आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ गई है जिसमे आलू के पौधे की पत्तियां झुलस जाती है। ऐसा लगता है जैसे पत्तियां जल गई हैं तथा आलू का उत्पादन भी प्रभावित होने की आशंका रहती है। यह बात चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के आलू वैज्ञानिक डॉ. राजीव ने गुरुवार को आलू फसल को झुलसा रोग से बचाने के उपाय के बारे में बताते हुए कही। उन्होंने बताया कि फफूंद की वजह से आलू के पौधे में अधिक नमी के कारण झुलसा रोग होता है। जिसकी समय से रोकथाम न होने पर फसल खेत में ही झुलस जाती है। उन्होंने आलू उत्पादक किसानों को सलाह दी है कि कॉपर हाइड्रोक्साइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से अथवा क्लोरोथालोनील 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से आलू फसल में छिड़काव करे जिससे इस महामारी रूपी बीमारी से आलू फसल को बचाया जा सकता है।

दैनिक जागरण कानपुर 31/12/2021 www.jagran.com

सीएसए की शिक्षण व्यवस्था परखेगी प्रत्यायन कमेटी

जासं, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) की शिक्षण व्यवस्था को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) की ओर से गठित प्रत्यायन कमेटी परखेगी। चार जनवरी को यह कमेटी विवि पहुंचेगी और चार दिन तक शैक्षिक गतिविधियों, शोध परियोजनाओं व अन्य सुविधाओं की जांच करेगी।

सीएसए के अधिकारियों ने बताया कि प्रत्येक पांच वर्ष में आइसीएआर की ओर से कृषि विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों का प्रत्यायन कराया जाता है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय कृषि शिक्षा के मानकों को पूरा कराना और छात्रों के लिए अत्याधुनिक व मूलभूत सुविधाओं को पूरा कराना है। चार जनवरी को नई दिल्ली से आइसीएआर के राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड की टीम विवि आएगी। टीम की रिपोर्ट के आधार पर ही सीएसए की देश भर के अन्य कृषि संस्थानों के बीच रैंकिंग भी जारी होगी। कुलपति डा. डीआर सिंह ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की परीक्षा पास करने वाले छात्रों का दाखिला भी उन्हीं संस्थानों में होता है, जिसे आइसीएआर की ओर से मान्यता प्रदान की जाती है। विवि में शोध कार्य चल रहे हैं और प्रयोगशालाएं, लाइब्रेरी, क्लासरूम हाईटेक किए जा चुके हैं।

निरीक्षण

- अगले सप्ताह नई दिल्ली से आएगी कमेटी, चार दिन तक करेगी मूल्यांकन
- कसौटी पर खरा होने के बाद ही विवि को बजट जारी करेगा आइसीएआर

शैक्षिक गुणवत्ता सुधारने के लिए बना था बोर्ड

आइसीएआर की ओर से वर्ष 1996 में प्रत्यायन बोर्ड स्थापित किया गया था, जिसे अब राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड कहा जाता है। कृषि शिक्षा में अकादमिक गुणवत्ता सुधारने और मान्यता प्रदान करने के लिए गठन किया गया था।